BA Part I (H)
Paper I

Dr. Chiranjeev Kumar Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

समाजीकरण के स्तर एवं प्रक्रिया (Stages and Process of Socialization) ⇒ समाजीकरण की प्रक्रिया बच्चे के जन्म के बाद से ही आरम्भ हो जाता है। विकसित मस्तिष्क, कोहनी को मोड़ने वाली हाथें, घुमायी जा सकने वाली गर्दन, साथ ही इसका और अंगुठे की विशिष्ट स्थिति, आदि के कारण ही मानव में सभ्यता एवं संस्कृति के निर्माण की क्षमता है। उसकी इस विशिष्ट संरचना के कारण ही उसमें सीखने के गुण पाये जाते है और सामाजिक सीख के द्वारा वह अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। सीखने की प्रक्रिया केवल समाज में ही सम्भव है।

बच्चे द्वारा सीखने की अवस्था को पियाजे ने छः भागों में बाँटा है —

(1) प्रथम अवस्था में बच्चा स्तनपान करते समय माता के वक्ष एवं स्तनों में सनसनी महसूस करता है।

(2) दूसरी अवस्था में बच्चा किसी वस्तु को एक कोण से देखता है और जब वह वस्तु आँखों से ओझल हो जाती है तो उसे ढूँढ़ता नहीं।

(3) तीसरी अवस्था में बच्चा जो देखता है यदि वह उसकी पहुँच में है तो उसे पकड़ने का प्रयास करता है। वह इन्द्रियों से प्राप्त सूचनाओं को समायोजित करने लगता है। 3-6 माह तक

(4) चौथी अवस्था (9 to 10 मास के बीच) शिशु किसी छुपी हुई चीज को ढूंढने का प्रयास करता है। यदि कपड़े के नीचे कुछ छिपा दिया जाता है तो वह कपड़े को हटा देगा किन्तु वह स्थान परिवर्तन के क्रम को नहीं समझ पाता।

(5) पांचवी अवस्था (12 to 18 मास) इस अवस्था में वह स्थान परिवर्तन के क्रम को समझने लगता है।

(6) छठी अवस्था (15 to 19 मास) - वह पदार्थ का चिन्तन करने लगता है ताकि वह उसकी अनुपस्थिति में भी उसकी कल्पना कर सके। सीखने की यह प्रक्रिया यहीं समाप्त नहीं होती वरन् जीवन पर्यन्त चलती रहती है और बच्चे का समाजीकरण होता रहता है।

समाजीकरण का कार्य विभिन्न स्तरों या सोपानों में होता है। ~~सभी~~ समाजीकरण के विभिन्न स्तर या सोपान इस प्रकार है -

(1) मौखिक अवस्था - जन्म से पूर्व गर्भ में भ्रूण गर्भ और आरामपूर्वक रहता है। जन्म के समय शिशु प्रथम संकट का सामना करना पड़ता है - उसे सांस लेनी पड़ती है। पेट भरने के लिए काफी श्रम करना पड़ता है, सर्दी, गीलेपन और अन्य असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। समाजीकरण का यह प्रथम चरण है जिसमें बच्चा मौखिक रूप से दूसरों पर निर्भर ~~रह~~ रहना ~~व~~ पड़ता है।

अथवा अपना सुख दुख मुंह के माध्यम से व मुंह की हाव-भाव से प्रकट करता है, इसीलिए इसे मौखिक अवस्था कहते हैं।

(2) शैशव अवस्था – इस अवस्था में बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है वह अपना शौच बहुत साफ रखे और इस अवस्था में उसे शौच प्रशिक्षण दिया जाता है।

(3) इडिपस या मातृमोह ग्रन्थि अवस्था – यह अवस्था 4 वर्ष से प्रारम्भ हो जाती है तथा 12 वर्ष तक चलती है। इसमें उसे यौन भेद तो पता चल जाता है परन्तु उनके क्रियाओं के बारे में स्पष्ट नहीं हो पाता।

(4) किशोरावस्था – यह ऐसी अवस्था है जिसमें युवा बालक-बालिका अपने माता पिता के नियन्त्रण से अधिकाधिक स्वतन्त्र होना चाहता है, विशेष रूप से यौन सम्बन्धी गतिविधियों में।

(5) युवावस्था – इस अवस्था में उसे कई पद प्राप्त होते हैं तथा कई तरह की भूमिकाओं को निभाना पड़ता है।

(6) प्रौढ़ावस्था – इस अवस्था में व्यक्ति पर सामाजिक दायित्व बढ़ जाते हैं। उस पर अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा एवं विवाह आदि का भार पड़ता है।

(7) वृद्धावस्था – इस अवस्था में शारीरिक, मानसिक व सामाजिक दृष्टि से कई परिवर्तन आ जाते हैं। अतः वह दादा, परदादा, ससुर, नाना आदि के रूप में कई नये पद को ग्रहण करता है और भूमिका निभाता है। अतः समाजीकरण की प्रक्रिया जीवनपर्यन्त चलती रहती है।